ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 6, Issue 12, December 2016 Impact Factor 5.132 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

o`fnd ,oa ykSfdd lkfgR; dk laxhr ls lac/k

लोकेश शर्मा
vfLlVsaV izksQslj] laxhr foHkkx
jktdh; dU;k egkfo|ky;] l&14] xq:xzke

साहित्य काव्य का अर्थ एवं परिभाषा

lkfgR; D;k g\ साहित्यकारों एवं साहित्य–मनीषियों ने अपने–अपने ढंग ls fopkj fd;k gSA lkfgR; viuk O;qRifÙk ewyd :i esa lfgr$;r ls cuk gS vkSj blds nks O;k[;k,a izpfyr gSaA iFke] ^lfgrL;Hkko%* lkfgR;e^ rFkk ^fgrsu lg lfgre~ rL;] Hkko% lkfgR;eA bu O;k[;kvksa ds vuqlkj साहित्य के दो अर्थ स्पष्ट होते हैं– साथ–साथ और हित सहित अर्थात् साहित्य में शब्द और अर्थ साथ–साथ रहते हैं ओर इससे हित सम्पादन होता है। राजशेखर ने अपने ग्रंथ 'काव्यमीमांसा' के अंतर्गत शब्द और अर्थ के सहभाव को साहित्य कहा है–

''शब्दार्थयोः यथावत्सहभावेन विद्या साहित्य विद्या।

साहित्य विषयक इन व्युत्पत्तिमूलक अर्थों से स्पष्ट है कि साहित्यकार शब्द और अर्थ के संयोग से lkfgR; dh jpuk djrk gSA viuk O;kid vFkZ esa og okXe; dk Hkh cks/k djkrk gSA''[1]

''शब्द और अर्थ का उचित अथवा सम्यक् योग साहित्य कहलाता है– सहितयोः शब्दार्थयो भावः lkfgR;aA lkfgR; dk vFkZ है शब्द और अर्थ का यथावत सह भाव अर्थात साथ होना। इस प्रकार सार्थक शब्दमात्र का नाम साहित्य है। जहां शब्द और अर्थ, विचार और भाव का परम्परानुकूलता के साथ सहभाव हो, वही साहित्य है। साहित्य की यह परिभाषा अत्यंत व्यापक है और इससे स्पष्ट है कि leLr xzFk leg lkfgR; gSA''[2]

साहित्य की महत्ता

''विश्व का प्राचीनतम साहित्य (वेद) ही हमें 'पाठ्य' तथा 'गेय'–रूप में मिलता है।''[3]

भर्तृहरि ने बहुत समय पहले साहित्य की महत्ता को व्यक्त कर दिया है–

^lkfgR;&laxhr dyk foghu%A

साक्षात् पशुः पुच्छ विषाणहीनः।।

vFkkZr~ lkfgR; laगीत कला से विहीन मानव बिना पूंछ वाले पशु के समान है।''[4] lkfgR; dh cgqr lh परिभाषाएं की गई हैं, परन्तु अधिकांशतः विद्वान इस बात पर सहमत हैं कि शब्द और अर्थ ही साहित्य का आधार हैं। साहित्य शब्द मनुष्य के भावों और विचारों की समष्टि हैं। अच्छे साहित्य मे lR;e~& शिवम्–सुंदरम्, का सामंजस्य होना आवश्यक है क्योंकि सत्य काव्य का साध्य, शिवम् काव्य का हित vkSj lkSUn;Z mldh lk/kuk gSA

oSfnd lkfgR;

lcls izkphu xzUFk ds :i esa _Xosn Lo;a esa ogn~ lkfgR; gSA blds dkO;&lkSan;Z Hkh vn~Hkqr] jkspd vkSj gn;gkjh gSA osn&eU= vFkkZr~ _pk,¡ dkO;e;rk ds xq.kksa ls ifjiw.kZ gSA mnkgj.k ds rkSj ij साहित्य को दर्शाती ऋचा उल्लेखित है–

''द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानै वृक्षं परिषस्वजाते।

त्योरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नत्नयो अभिचाकशीति।।

दो समान आयु वाले मित्र पक्षी (ईश्वर और जीव) एक ही वृक्ष (शरीर) का आलिङ्गन कर रहे हैं। उसमें से एक (जीव) स्वादिष्ट पीपल के फल (सांसारिक सुख भोग) का भक्षण करता है दूसरा ईश्वर (उपभोग) किये हुए फल को केवल देखता रहता है। ऋग्वेद के साहित्य में ईश्वर जीव आij izd`fr ds Lo:i dk :id vyadkj }kjk le>us ds fy, mijksDr _pk esa lqnj vkyadkfjd o.kZu gSA''[5]

izd`fr dh vn~Hkqr NVkvksa] izd`fr esa fo|eku ty] ouLifr txr] i`Foh] vUrfj{k vkfn ls lEcaf/kr _pkvksa dk mYys[k Hkh osnksa esa lqxfBr gSA mnkgj.kkFkZ %&

^^|kS% शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवीशान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।

वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः।

सर्वं शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।।''[6]

;tqosZn esa of.kZr bl _pk ds lkfgR; esa izd`fr ds thou/kkjk rÙoksa dh Lrqfr dk o.kZu gSA fueZy जल जिसके बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती, शुद्ध वायु जिसके बिना प्राण संचलित नहीं हो सकते, पवित्र औषधियां, वनस्पति जगत, पृथ्वी, अंतरिक्ष सभी निर्मल होने pkfg, rHkh thou mUur हो सकता है। यदि ये तत्त्व प्रदूषित हो जाएं तो जीवन संकटों से घिर जाएगा। उपरोक्त ऋचा में इन

ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 6, Issue 12, December 2016 Impact Factor 5.132 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

rÙoks dk fuely gkus dh Lrqfr dh xbZ gSA ;s _pk,a ekuo dks izdfr ds egÙo ds ckjs esa crkrh gSa व दिए गये संदेशों के माध्यम से मानव को प्रकृति dks lehi ykrh gSA

ykSfdd lkfgR;

^^jkek;.kL; lkfgR;d egRoe~& jkek;.kdkfyd lekt /keZ iqjk.k:i vkLFkk vkfndkO;k okYehdh; jkek;.k lkLd`r okxeL; vuqie jRu fo|rA dkO;{ks= foy{k.kerL; lkfgR;d&egRoe oRrZrA^^[7]

fo}kuksa dk ekuuk gS fd ykSfdd xhr dks :i esa vkfn dfo okYehdh; d`r jkek;.k mPp dksfV dk साहित्य है। यह ग्रंथ भी संस्कृत भाषा में लिखा गया है। इस साहित्य में संगीत विषेयक समुन्नति तथा प्रसार के सर्वत्र दर्शन होते हैं।

आदिप्रभृति गेयं स्यान्न पार्थिवम्।

firk fg loHkwrkuka jktk Hkofr /kekZr%AA

^vkjEHk ls gh dkO; dk xku djuk pkfg;A rFkk ykx ,slk dkbZ crkrs u djuk] ftlls jktk dk vieku gks(D;ksafd jktk /keZ dh nf"V lEiw.kZ izkf.k;ksa dk firk gksrk gSA^

''शब्द संगीत का आदिम रूप ही रामायण का अनुष्टप् छन्द है, रामायण में संगीत का उल्लेख किष्किन्धा dk.M esa bl izdkj vk;k gSA

षट्पादतन्त्रीमधुराविधानं प्लंवगमोदीरितकण्ठतालम्।

आविष्कृतं मेघमृदंगनादैर्वनेषु संगीतमिव प्रवृत्तम।।

क्वचित्प्रनृतैः क्वचिदुन्नदद्भि क्वचिच्च वृक्षाग्रनिषण्णकायैः।

ब्यालम्बबर्हाभरणैर्मयूरैर्वनेषु संगीतमिव प्रवृत्तम।A

श्री रामचन्द्र किष्किन्धावन का वर्णन करते हुए लक्ष्मण जी से कहते हैं–हे लक्ष्मण, देखो भ्रमरों का गुंजार oh.kk dk e/kqj Loj tSlk gSA esa<d ekuks vius d.B ls rky ds cksy cksy jgs gSA es?k dk xtZu e`nax ds ukn tSlk lqukbZ ns jgk gSA yxrk gS ou esa laxhr py jgk gSA vkSj Hkh ns[kks ;s e;wj संगीत का कैसा दृश्य उपस्थित कर रहे हैं। इन लम्बी–लम्बी चोटियों वाले मयूरों में से कुछ तो नाच jgs gSa] dqN xk jgs gSa] dqN o`{kksa dh vxzHkkx esa cSBs gq, bl uR; vkSj xku dk vkuUn ys jgs gSA

ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 6, Issue 12, December 2016 Impact Factor 5.132 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

yxrk g ou e lxhr py jgk gA^^8 jkek;.k e xku d lkFk ok|k dh lxr dk o.ku Hkh vud LFkkuk ij मिलता है। निम्न श्लोक इसकी पुष्टि करता है।

rn ;ok â"Veu lk Üo% iHkkr lekfgrkA

xk;r e/kj x;; rU=hy;LkefUoreAA

vr,o re nkuk Hkkb iklUu vkj ,dkxfpr gkdj dy lcj l gh oh.kk d y; ij e/kj Loj l jkek;.k&xku vkjEHk dj nkA

^rylhnkl th u viu lkfgR; e lxhr d fy, mÙkjnk;h rÙok dk de bl idkj fu:fir fd;k g&

o.kkuk vFk l?kkuk jlkuk NUn lkefi

exykuk p drkjk oUn ok.kh fouk;dkA

vFk ;g g fd lke ;kuh lxhr dh i.krk o.k] vFk] jl] NUn d lePp; ,o lefpr iLrfrdj.k से 'साम' के स्तर तक पहुंचती है। साम स्तर की विशेषता यह है कि वह संगीत को मंगलकारी बना nrk g rFkk lke d dÙkk dk] uk;d dk oUnuh; cuk nrk gA dkyhnkl viuh tkxr y[kuh d ek/;e l okd vkj vFklEifDr }kjk ikBd d eu vkj fpÙk d ry ij tk ukn iSnk djr g og vUr% dj.k dk Hkjiij vudy dju okyk gA blh u ckYehfd dk dfo cuk;k vkj blh u dkfynkl dk mud xFk dekj lHkoe e ;kx rd igpk;kA^^9

महाकवि कालीदास को संस्कृत साहित्य के आकाश का दैदिप्यमान सूर्य माना जाता है। उन्हें काव्यस्रष्टा, कविकुलगुरू, सफल महाकाव्यकाल, सर्वोत्कृष्ट नाटककार, सर्वश्रेष्ठ गीतिकाव्य का प्रणेता माना जाता है।

अपने साहित्य के शब्दचयन में उन्हें नीरक्षीर विodh dh lkk nh xbl gA dkfynkl e lo rkse[kh प्रतिभा विद्यमान थी। उनके रचित मेघदूतम व अभिज्ञानशाकुन्तलम् ग्रंथों में अद्वितीय साहित्य रचना n[ku dk feyrh gA miek d {k= e Hkh dkb mudk lkuh ugh gA ^miek dkfynklL;^ ;g mfDr vkt rd fo}kuk d gn; e lekbl gbl gA blhfy, lkfgR; d {k= e dkfynkl lHkh dfo;k e vf}rh; eku x, gA

इसी कारण समीक्षकों का कहना है–''पुरा कविनां गणनाप्रसंगे कनिष्ठिकाधिष्ठितकालिदासः।

v|kfi rRrY;dojHkkoknukfedk lkFkorh cHkoAA^^10

egkdfo dkfynkl d Lrk=k e mच्च कोटि का साहित्य भरा पड़ा है। इसका दर्शन गंगा स्तोत्र में स्पष्ट देखने को मिलता है। उदाहरणार्थ–

''नमस्तेऽतु गंगे त्वदंगप्रसंगाद्भुजंगास्तुरंगाः कुरंगाः प्लवंगाः।

अनंगारिरंगाः ससंगाः शिवांगा भुजंगाधिपांगीकृतांगा भवन्ति।।''[11]

''साहित्य के गेय रूप का अगर हम मूल देखें तो सर्वप्रथम वैदिक काल ही हमारे मस्तिष्क में आता है। lkexku d :i e _d dh _pk,i x; :i ikrh gSA

उन ऋचाओं को गेय रूप प्रदान करने के लिए जिन अक्षरों व शब्दों का प्रयोग छंद पूर्ति के लिए किया x;kA mu ^LrkHkk{kjk* को एक स्थूल पहचान यहीं से मिली, यदि ऐसा कहें तो अतिशयोक्ति न होगी। अनेक शास्त्रावचन इसके प्रमाण हैं।''[12]

भारतीय साहित्य में महाभारत काल का एक विशिष्ट स्थान रहा है। इस विशालकाय महाकाव्य में प्राचीन Hkkjrh; lLd`fr&lH;rk&lkfgR; dk lok±xh.k fp=.k miyC/k gksrk gSA blls egkdk0; e Hkh lxhr d दृष्टान्त यत्र–तत्र देखने को मिलते हैं।

''महाभारत कालीन साहित्य में साम गान का अर्थात् वेद गान यथेष्ट रूप में होता था। यज्ञ के समय lke xku d vfrfjDr Lrfr] Lrke] xkFkk bR;kfn dk Hkh xku gksrk FkkA blls dky e ;KkRlo gks ;k lkekftd mRlo lHkh e lkfgR; ,o lxhr dk LFkku iew[k FkkA''[13] mnkgj.kkFkZ&

^^lkekfu xk;u ;kE;kfu] lkekfu lkexkLrL; xk;fUr ;e lknu**[14]

यह उक्ति सामवेद की ऋचा के गान को स्पष्टतः दर्शाती है।

''यद्यपि महाभारत संगीत का ग्रंथ नहीं है फिर भी इस विशाल ग्रंथ में यत्र–तत्र सांगीतिक साहित्य की चर्चा हुई है। उन में श्रीविष्णुसहस्रनाम स्तोत्र, श्रीकृष्णद्वादशनाम स्तोत्र आदि का साहित्य प्रमुख्यतः सामने आता है। निम्न स्तोत्र का साहित्य इस बात को दर्शाता है–

श्रीकृष्णद्वादशनामLrks=e&

fd r ukelgL=.k foKkrsu rokt\uA

rkfu ukekfu foKk; uj% ikik% iseP;rAA

प्रथमं तु हरिं विन्द्याद्द्वितीयं केशवं तथा।

r`rh;: ineukHk p prFk okeu: Lejr AA^^[15]

इस गेय स्तोत्र के साहित्य में भगवान श्रीकृष्ण के बारह नामों की स्तुति का उल्लेख दर्शाया x;k gSA JhenHkxorxhrk tSls egku xzUFk dk lz`tu Hkh blh dky esa gqvk gSA

laxhr o lkfgR; dk lEcU/k

"शब्दों के माध्यम से हृदयगत भावों की कलात्मक, रसात्मक और लयात्मक अभिव्यक्ति ही काव्य का रूप /kkj.k djrh gSA blh izdkj Loj ds ek/;e ls ogh dykRed] jlkRed vkSj y;kRed vfHkO;fDr laxhr dk :i /kkj.k djrh gSA nksuksa dk vk/kkj ,d gS] vfHkO;fDr ds ek/;e fHkUu gSA ijUrq nksuksa ds lefUor :i vf/kd vkuUnnk;d cu tkrs gSA lkfgR; ,oa Loj ds lefpr laxe ls gh xk;d Jksrkvksa ds vUrj dks Nw ldrk gS rFkk dfo jlkuqHkwfr djk ldrk gSA ;|fi dkO; dh jl&lfjrk esa voxkgu dk viuk vyx vkuUn gS vkSj Loj&ygjh esa fueTtu djus esa ,d vyx शान्ति मिलती है, परन्तु काव्य और संगीत की समन्वित गंग–धारा का स्नान अलौकिक व अनिर्वचनीय vkuUn dh vuqHkwfr djkrk gSA blhfy, dkO; vkSj laxhr dk vU;ksU;kfJr lEcU/k lnk&lnk ls gS vkSj jgsxkA

कवि राजशेखर के अनुसार–

आगोपालकमायोषिदास्यामेतस्य लेह्यता। इत्थं कविः पठन्काव्यं वाग्देव्या अतिवल्लभः।।

vFkkZr& tks dfo dkO; dks bl izdkj i<+s ldsa ¼vFkok xku dj lds½ fd jl dk vkLoknu xksikydksa ¼Xokyksa½ vkSj vui<+ fL=;ksa rd dks gks tk;s] og okXnsoh ¼ljLorh½ dk vR;Ur fiz; gksrk gSA^^[16] संगीत वस्तुतः कठिन से कठिन साहित्य को भी आसान ढ़ंग से जनमानस के हृदय में प्रवेश करवा देता है। ये संगीत की अनुपम विशेषता है।

^^i0 vksadkj ukFk Bkdqj us j.kthr jke Lekjd lEo.kZpUnz ds volj ij viuh laxhrlaLd`fr ij भाषण देते हुए ठाकुर जी ने संगीत तथा साहित्य के अविच्छिन्न संबंध की पुष्टि का महत्वपूर्ण शब्दों में leFkZu Hkh fd;k gS&esa rks lkfgR; dks lnSo gh laxhr dk lgksnj ekurk vk;k gSA dkj.k&^laxhre; lkfgR; ljLoR;k% dqpn~o;eA lkहित्य जिसका जीवन है और संगीत उसके जीवन का निष्कर्ष है। ऐसी oh.kk&/kkfj.kh Hkxorh ekrk ds ;qxy i;ks/kjksa dk xg.k djds gh ftlds thou dh xgu uhao j[kh xbZ gS] ,sls lkfgR;dkj rFkk laxhrdkj ds fy, Hkkb ds vfrfjDr vU; dksu lk lEcU/k ;kX; fxuk

ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 6, Issue 12, December 2016 Impact Factor 5.132 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

tk;A viuh nk vk[k tk fd lkFk gh n[krh g] g lrh&jkrh g] fcYdy ,lk gh lc/k lkfgR; vkj lxhr dk gA^^[17]

इस प्रकार काव्य और संगीत का संबंध शाश्वत है—अध्यात्मवाद की दृष्टि से भी और विकासवाद की दृष्टि से वेद को अपौरूषेय माना जाता है, इस प्रकार वैदिक ऋचाओं को गाने के नियम भी अपौरूषेय हुए। ऋग्वेद के अधिकांश मंत्र जब सस्वर गाये जाते हैं, तब उन्हें सामवेद कहा जाता है। ऋग्वेद के पाठ में मन्त्रोच्चारण सस्वर किया जाता है। इस सृष्टि से वैदिक साहित्य के साथ संगीत का शाश्वत lc/k fl) gkrk gA ^ofnd dky l ydj vkt rd के साहित्य के आधार पर हम यह निश्चयपूर्वक कह सकते हैं कि शब्द रमणीय अर्थ की व्यंजना करने में तभी समर्थ होता है, जब उसके साथ संगीत का भी योग हो। संगीत और काव्य का घनिष्ठ संबंध स्वतः सिद्ध है। साहित्य के योग से संगीत की jpuk e vFk dk xkHkh;l vkrk g vkj lxhr d ;kx l dk0; e ykfyR; dh of) gkrh gA^^[18]

‘‘संगीत और साहित्य का संबंध मस्तिष्क से न होकर हृदय से है। साहित्यकार हृदय की उमड़ती, epyrh gbl Hkkoukvk dk gh dk0; dk :i fn;k djrk gA dfork ;k vU; fdlh idkj dk mPp साहित्य केवल मस्तिष्क से ही नही le>k tkrk] mldk LFkku rk ân; e g vkj ogh l meM dj og dk0; dk :i /kkj.k dj yrk gA ;gh ckr ge lxhr e Hkh feyrh gA ekuo&ân; dh dkeyre Hkkoukvk dk tc Loj vkj rky d <kp e <ky fn;k tkrk g] rc mldh lKk lxhr gkrh gA^^[19] _pk ,o Lrk= lcl ikphu ofnd lkfgR; d :i e fo|eku gA bl lkfgR; u fdlh न किसी रूप में सभी को अपनी और आकर्षित किया है।

^^lkfgR; ,o dk0; dk fo}kuk u ,d&nljs dk lekukFkh ekuk gA tlk fd fofnr g fd lkfgR; dk vfHkik; ^lfgr Hkko^ ls g ftlds vUrxr शब्द का अर्थ समाहित हो वही साहित्य अथवा काव्य gA^^[20]

‘‘साहित्य किसी देश की राष्ट्रीय संस्कृति तथा जातीय भावनाओं का प्रतीक होता है। संस्कृत साहित्य भारत का राष्ट्रीय गौरव है। हमारा संस्कृत साहित्य हमारी संस्कृति का निर्मल दर्पण है। संस्कृत साहित्य e ge viu xkjoe; vrhr dh >kdh n[ku dk feyrh gA lkfgR; ijk rFkk vijk fo|kvk dk महनीय कोष है। प्राचीनता की दृष्टि से यह अद्वितीय है। व्यापकता की दृष्टि से वह सर्वांगीण है। इसमें पुरूषार्थ चतुष्टय धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष का सांगोपांग विवेचन किया गया है।’’[21]

egku lxhrKk d fopkj

साहित्य एवं संगीत के संबंध में महान दार्शनिकों के अनेक विचार देखने को मिलते हैं, उनमें से कुछ egku fopkjdk d fopkj ;gk mn/kr g&

“पं0 ओंकारनाथ ठाकुर ने काव्य और संगीत का संबंध अटूट बताया है। इनके शब्दों में–“अकारादि 0;tuk d lkFk ^v^ vkfn Lojk dk tk lc/k g] ng d lkFk vkRek dk tk lc/k g] ogh lxhr dk dk0; l gA”[22]

“डॉ0 सुभद्रा चौधरी के शब्दों में–काव्य के आधार, भाषा में स्वर यानि आनंदांश है तो, लेकिन गौण है। blfy, mld }kjk vkun dh oSlh vuHkfr ugh gkrh tSlh lxhr d }kjk gkrh gA mle tc Loj का यथोचित योग होता है तो वह असीम आनंद देता है। आनंदांश की प्रधानता के कारण गांधर्व अFkkr संगीत को सभी कलाओं में श्रेष्ठ माना गया और सच्चिदानंद रूप ब्रह्मा के समक्षक रखा गया।”[23]

“पं0 विष्णु दिगम्बर पलुस्कर के शब्दों में–dk0; vkj lxhr e mruk gh vrj g] ftruk lx.k vkj निर्गुण में है। काव्य सगुण है और संगीत निर्गुण। अंतर अति सूक्ष्म है। काव्य की विशिष्टता उसके अंतर में निहित स्वर है और स्वर का अलंकार शब्द है। संगीत नाद प्रधान साहित्य है और साहित्य शब्द i/kku lxhr gA nkuk dk ikFkD; gkfu dh lEHkkoukvk l Hkjk gvk gA”[24]

“ज्ञान राशि के संचित कोश का नाम ही साहित्य है।

&egkohj il kn f}onh

Ekkuo u ukuk idkj d vLoknu e gh viuh miyfC/k djuh pkgh g] ck/kkghu yhyk d {k= eA mlh fojkV fofp= yhyk txr dh lf"V है साहित्य।

&johUnukFk Bkdj

प्रत्येक देश का साहित्य वहां की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिम्ब होता है।

–आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

;|fi lxhr vkj dk0; dk iFkd {k= g] vyx vk/kkj g] vfHk0;fDr dk ek/;e fHkUu g vkj iHkko Hkh fcYdy vyx g] fQj Hkh nkuk dk l;kx gku ij lkuk e lx/k tSlk iHkko mRiUu gkrk gA blfy, Hkkjrh; lxhr e in dk lxhr&cká ¼Nonmusical element½ rÙo ugh ekuk x;kA gekj

;gk in&jfgr laxhr dk laxhr gh ugha dgk x;k gSA ,sls ^fuxhr^ ;k ^cfgxhZr^ dh J.kh esa j[kk x;k gSA^^[25]

_pk ,oa Lrk= dk lkfgR; lkaxhfrd :i esa tuekul ij vf/kd iHkko Mky ldrk gSA ykfdd Lrk=ka esa ofnd&mifu"knka dk gh Kku Hkjk iMk gS D;kfd dgha u dgha ykfdd Lrk= jpukdkjka dk onka dh rjQ :>ku jgkA

पद्म पुराण में संगीत व साहित्य की महत्ता के संदर्भ में श्लोक उदधृत है–

^^ukga olkfe oSdq.B ;kfxuka gn;s u pA

मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद।।

eRi;jk.kdFkkJ|Rok enHkDrkuka p xk;uesA

निन्दन्ति ये नरा मूढ़ास्ते मद्द्वेष्या भवन्ति हि।।

अर्थात् भगवान विष्णु कहते हैं, 'हे नारद, न तो मैं वैकुण्ठ esa jgrk gw vkj u ;kfx;ka ds gn; esA esjs HkDr tgka xku djrs gS] ogha esa fuokl djrk gWA tk es< ekuo esjh iqjk.k&dFkk vkj esjs HkDrka dk गान सुनकर निन्दा करते हैं, वे मेरे द्वेष के पात्र होते हैं।''[26]

^^laxhr o lkfgR; ds lac/k esa dgk tk ldrk gS कि मूल कल्पना की दृष्टि से ओज, प्रासादिकता, सुलभता, शब्दों का सुन्दर आयोजन, भावाविष्कार आदि का ध्यान रखकर की गई रचना को श्रेष्ठ काव्य dgk tk ldrk gSA mlh jpuk dk vuq:i jkx rky esa Lojc) djus ls og xs; jpuk gks tkrh gSA

jlkfHkO;fDr o HkkokfHkO;fDr ds fy, स्वर व शब्द दोनों को ही आवश्यक व महत्त्वपूर्ण माना जाना चाहिए। जहाँ तक संभव हो स्वर व शब्द का ऐसा सन्तुलन बनाना चाहिए कि जिससे गीत को भी और राग को भी शुद्ध रूप से अभिव्यक्ति किया जा सके। आध्यात्मिक, ऐतिहासिक, साहित्यिक व सांगीतिक दृष्टि से संगीत और सkfgR; ,d gh iz—fr ds nks Lo:i gSA laxhr ,oa lkfgR; ,d&nwljs dks Åtk iznku djrs gSA^^[27]

1) हिन्दुस्तानी गायन शैलियों में निहित पदों का साहित्यिक अवलोकन, डॉ0 सुमन, पृ0 1

2) भारतीय संगीत में शुष्काक्षरों के प्रयोग की परम्परा, डॉ0 विजय कुमार, पृ0 1,2

3½ laxhr if=dk] HkfDr laxhr vad] i0 28

4) हिन्दुस्तानी गायन शैलियों में निहित पदों का साहित्यिक अवलोकन, डॉ0 सुमन, पृ0 1

5½ gfjiHkk if=dk] i0 1

6½ gfjiHkk if=dk] i0 38

7) संगीत शिक्षण के विविध आयाम, डॉ0 कुमार ऋषितोष, पृ0 48

8) भैरवी शोध संगीत पत्रिका, पृ0 83,84

9½ gfjiHkk if=dk] i0 88

10½ ogn Lrk= jRukdj] dkfynkl d r] i0 155

11) भारतीय संगीत में शुष्काक्षरों के प्रयोग की परम्परा, डॉ0 विजय कुमार, पृ0 1

12½ Hkkjrh; lxhr dk bfrgkl] Mk0 Bkdj t;no flg] i0 189

13) संगीत शिक्षण के विविध आयाम, डॉ0 कुमार ऋषितोष, पृ0 57

14½ ogn Lrk= jRukdj] i0 jkertik.M;] i0 210

15) कृष्ण भक्ति धारा : संगीत और काव्य, डॉ0 अनीता जौहरी, पृ0 204

16) कृष्ण भक्ति धारा–संगीत और काव्य, डॉ0 अनीता जौहरी, पृ0 205

17) कृष्ण भक्ति धारा–संगीत और काव्य, डॉ0 अनीता जौहरी, पृ0 203

18) कृष्ण भक्ति धारा : संगीत और काव्य, डॉ0 अनीता जौहरी, पृ0 205,206

19) हिन्दुस्तानी गायन शैलियों में निहित पदों का saifgfR;d voykdu] Mk0 leu] i0 9

20½ lxhr ekfld if=dk] i0 27

21) भारतीय संगीत में शुष्काक्षरों के प्रयोग की परम्परा ,डॉ0 विजयकुमार, पृ0 3

22½ Hkkjrh; lxhr e rky vkj :i fo/kku] Mk0 lHknk pk/kjh] i0 306

23) भारतीय संगीत में शुष्काक्षरों के प्रयोग की परम्परा, डॉ0 विजय कुमार

24½ lokRre lfDr;k ,o lrk dh ok.kh] i0 132] 133

25) हिन्दुस्तानी गायन शैलियों में निहित पदों का साहित्यिक अवलोकन, डॉ0 सुमन, पृ0 28

26½ lxhr if=dk] HkfDr lxhr vd] i0 14

27) हिन्दुस्तानी गायन शैलियों में निहित पदों का साहित्यिक अवलोकन, डॉ0 सुमन, पृ0 51